मेरा नाम गुलाब है

समीक्षा : ध्रुव देसाई

मेरा नाम गुलाब है एक ऐसी महत्त्वपूर्ण पुस्तक है जिसे हम अपनी कक्षाओं में सभी बच्चों (और वयस्क पाठकों के लिए भी) के लिए ला सकते हैं। इसमें हाथ से मैला ढोने या मैनुअल स्कैवेंजिंग के मुद्दे पर बात की गई है। भारत में यह एक ऐसी अवैध प्रथा है जो अभी भी व्यापक रूप से प्रचलित है, और जाति भेदभाव व अस्पृश्यता के मुद्दों से जुड़ी हुई है।

यह पुस्तक इसी गम्भीर मुद्दे पर बारीक़ी से नज़र डालती है, लेकिन समानुभूति के साथ। गुलाब के पिता एक मैनुअल सफ़ाई कर्मचारी हैं (जो हाथों से नालियों और गटरों को साफ़ करते हैं), और गुलाब को इस बात से सख़्त नफ़रत है कि उन्हें यह काम करना पड़ता है। उसके मन में इस बात को लेकर बेहद ग़ुस्सा है। ऊपर से उसकी कक्षा के शरारती बच्चे उसे इस बात के लिए तंग भी करते हैं। इसलिए वह फ़ैसला करती है कि वह इस समस्या को हल करने की पूरी कोशिश करेगी। वह अपने पिता से उनके काम के बारे में पूछती है, और वे बड़े धैर्य व ईमानदारी के साथ जवाब देते हैं। पिता के जवाब उसकी आँखें खोलने के साथ-साथ उसका दिल भी तोड़ देते हैं। पुस्तक का यह हिस्सा बख़ूबी लिखा गया है।

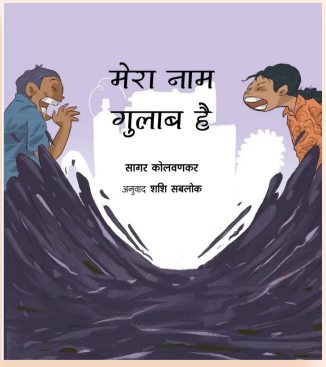

लेखक और चित्रकार : सागर कोलवणकर
अनुवाद : शशि सबलोक
आयु वर्ग : 6-16 वर्ष
पृष्ठ संख्या : 32
भाषाएँ : हिन्दी, अँग्रेज़ी, कन्नड़
प्रकाशक : तूलिका पब्लिशर्स, चेन्नई

इस पुस्तक को देखकर लोगों को लग सकता है कि क्या यह बच्चों के लिए उपयुक्त है। अकसर बड़े यह मानते हैं कि बच्चों में ऐसी जटिल समस्याओं को समझने की क्षमता नहीं होती। इस पुस्तक के लेखक सागर कोलवणकर ने एक साक्षात्कार में कहा :

"मैंने बच्चों को समाज के गम्भीर मुद्दों के बारे में अपने माता-पिता से सवाल पूछते हुए देखा है। माता-पिता जो जवाब देते हैं, उससे उन्हें समस्या को समझने में मदद मिलती है। यदि माता-पिता झूठ बोलते हैं तो बच्चा उस झूठ पर विश्वास करेगा। यदि वे कुछ छिपाते हैं तो बच्चा इस मुद्दे से अनजाना रह जाएगा। दूसरी ओर, यदि हम उन्हें जागरूक करते हैं तो यह ज्ञान समानुभूति को जन्म देगा जो युवा मन में निष्पक्षता और न्याय की भावना पैदा करने की दिशा में पहला क़दम है।"

(https://tulikapublishers.blogspot.com/2021/08/my-name-is-gulab-interview-with-author.html)

कुछ लोग यह भी मानते हैं कि बच्चे बेहद मासूम होते हैं और उनके दिमाग़ में असमानता के बारे में कोई विचार नहीं होता है। इसलिए वे तर्क देते हैं कि अगर हम बच्चों को ऐसी पुस्तकें पढ़ने के लिए देंगे तो इसका मतलब यह होगा कि हम उनके मन में इस प्रकार के नकारात्मक विचार और दृष्टिकोण पैदा कर रहे हैं। ऐसे लोगों के लिए मेरा जवाब यह है कि बच्चे भी तो उसी दुनिया में रहते हैं जिसमें हम रहते हैं, और जैसा कि हर शिक्षक जानता है, बच्चों की क्षमता को कम करके नहीं आँका जा सकता; उनकी अवलोकन शक्ति तेज़ होती है जो लगातार विकसित होती रहती है। बच्चे अपने आस-पास के वातावरण में इन चीज़ों को देखते रहते हैं; वे सीवर, गटर और कचरे के बारे में भी जानते हैं तथा इसके बारे में सोचते भी हैं। यदि कुछ अति सुविधा सम्पन्न बच्चों को इन चीज़ों के बारे में कभी सोचना तक नहीं पड़ा है तो हमारी ज़िम्मेदारी और भी बढ़ जाती है, क्योंकि तब हमें उनसे इस बारे में बातचीत करनी होगी ताकि उन्हें समानुभूति और करुणा के साथ विकसित होने में मदद मिल सके।

अपने बच्चों के साथ इस तरह की पुस्तकें पढ़ने का मतलब है उनके साथ ऐसी महत्त्वपूर्ण बातचीत की शुरुआत करना जो उनकी शिक्षा का ज़रूरी हिस्सा है।

जब मैंने अपने बच्चों के साथ तीसरी, चौथी और पाँचवीं कक्षा में यह पुस्तक पढ़ी तो वे इस कहानी और सुन्दर व विचारोत्तेजक चित्रों से बेहद प्रभावित हुए। उन सभी ने कई सवाल पूछे। फिर हमने अपने घरों में कूड़े-कचरे के निपटान के तरीक़ों के बारे में चर्चा की,

और बच्चों ने घर जाकर अपने माता-पिता व बड़े भाई-बहनों से सवाल पूछे। हमने एक कला प्रोजेक्ट का आयोजन भी किया जिसमें बच्चों ने कूड़े-कचरे के निपटान की समस्या के लिए अपने 'समाधानों' के चित्र बनाए। इसमें हमें कुछ अद्भुत 'आविष्कार' भी देखने को मिले, जैसे कि एक ऐसी मशीन जो मानव अपशिष्ट (मल) को हीरे में बदल देती है और दूसरी, जो शौचालय के मल को सीधे खेतों (भूमि के अन्दर) में डाल देती है।

कक्षा की एक छात्रा को कहानी में पढ़ी शरारती बच्चों की बदमाशी बिल्कुल अच्छी नहीं लगी, और उसने एक छोटा-सा नाटक तैयार किया। इसमें उसने मुख्य पात्र, गुलाब, को उन शरारती बच्चों को 'सबक़ सिखाते हुए' दिखाया। इन सभी चर्चाओं और गतिविधियों से मुझे, एक शिक्षक के रूप में, अपनी कक्षा की ऐसी कुछ गतिविधियों को समझने में मदद मिली जिनके बारे में मुझे पहले पता नहीं था। बच्चों ने साझा किया कि वे भी कहानी की तरह तो नहीं, लेकिन हाँ, कुछ अलग तरीक़े से, अनजाने में जाति-आधारित भेदभाव कर रहे थे। इससे हमें एक विद्यालय के रूप में इस मुद्दे पर काम शुरू करने में मदद मिली। इस कहानी का भाव यद्यपि पूरी तरह से सकारात्मक है, लेकिन लेखक किसी जादुई 'उत्तम समाधान' की पेशकश नहीं करता। गुलाब के माता-पिता चुपचाप यह दर्शाते हैं कि समस्या सिर्फ़ उपकरणों और मशीनरी तक सीमित नहीं है, बल्कि यह लोगों के दिमाग़ में बसी हुई है।

कहानी के अन्त में भी वही शरारती बच्चे अभी भी गुलाब को चिढ़ा रहे थे। हमें बार-बार याद दिलाया जाता है कि अपने अच्छे इरादों और प्रयासों के बावजूद, परिवर्तन के लिए बहुत काम करना होगा, और हमें ऐसे लोग मिलते ही रहेंगे जो इसका विरोध करेंगे और असमानता को बढ़ावा देंगे। मेरा मानना है कि यही बात इस पुस्तक की ताक़त है क्योंकि यह हमें कोई काल्पनिक परी कथा नहीं बताती, बल्कि वास्तविकता को सामने रखती है और बेहतर भविष्य की आशा पर आधारित है।

ध्रुव देसाई अज़ीम प्रेमजी यूनिवर्सिटी में शिक्षक-शिक्षा टीम के सदस्य हैं। वे अपना अधिकांश समय या तो खेलने और शारीरिक शिक्षा के बारे में सोचने में बिताते हैं, या फिर बच्चों के साहित्य को पढ़ने और उसके बारे में सोचने में।

सम्पर्क : dhruva.desai13@apu.edu.in

राजा की मूँछें

समीक्षा : जय शंकर चौबे

राजा की मूँछें किताब आशा नेहेमिया द्वारा लिखी गई कहानी 'The Raja's Moustache' का हिन्दी अनुवाद है। चिल्ड्रन्स बुक ट्रस्ट द्वारा प्रकाशित यह कहानी की किताब एक ऐसे राजा के बारे है जिसे अपनी मूँछों पर बहुत गर्व है। उसकी मूँछें इतनी अनोखी और बड़ी होती हैं कि वह चाहता है कि राज्य में हर कोई उसकी मूँछों की तारीफ़ करे। राजा का अहंकार और मूँछों को लेकर उसकी विचित्र सोच पूरे राज्य के लिए परेशानी बन जाती है।

कहानी में हास्य और व्यंग्य का अद्भुत मिश्रण इस कहानी को ख़ास बनाता है। कहानी का नाम पढ़ते ही मन में एक कौतूहल पैदा होने लगता है। जब इस कहानी को कक्षा 4 व 5 के बच्चों को पढ़कर सुनाया तब उन्हें कहानी में मूँछ को गोल और ऐंठदार बनाने की तरक़ीब में बहुत मज़ा आया।

कहानी पर बच्चों से बातचीत करने से उनमें उत्सुकता और सोचने के अवसर बनते हैं। बातचीत के लिए पहले से कुछ सवाल सोचना पड़ते हैं, कुछ सवाल बातचीत के दौरान भी ख़्याल में आते हैं। मिसाल के तौर पर, राजा ने अपनी मूँछें गोल-गोल और ऐंठी हुई रखने के लिए क्या-क्या उपाय किए; क्या आपने किसी को अपनी चीज़ों पर इतराते हुए या दिखावा करते हुए देखा है; यदि आप मंत्री होते तब राजा को क्या सुझाव देते; या राजा होते तो अपने राज्य में क्या-क्या करना चाहते और राजा को अपनी मूँछों से इतना लगाव क्यों था, आदि।

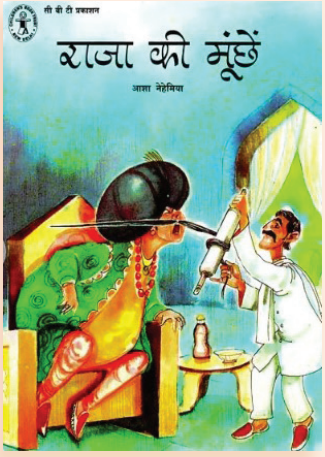

लेखिका : आशा नेहेमिया
चित्रांकन : बी जी वर्मा
अनुवाद : महेन्द्र यादव
भाषा : हिन्दी व अँग्रेज़ी में उपलब्ध
प्रकाशक : चिल्ड्रन्स बुक ट्रस्ट

बातचीत के अलावा, बच्चों को इस कहानी के आधार पर रोल प्ले करने में मज़ा आता है। रोल प्ले में एक बच्चा आत्ममुग्ध राजा बने और दूसरा बच्चा मंत्री बनकर राजा को उपाय सुझाए या उचित तर्क देकर समझाए। एक अन्य गतिविधि करते समय, हमने कक्षा में सभी बच्चों को छोटी-छोटी पर्चियाँ बाँट दीं। उस पर्ची पर उन्हें अपने बारे में, जिस चीज़ पर उन्हें गर्व है उस पर, एक वाक्य लिखने को कहा। फिर इन पर्चियों को आपस में बदलने को कहा। अब बच्चों को अपने साथी की एक विशेषता लिखने को कहा। इसके अलावा, रचनात्मक लेखन या क्रिएटिव राइटिंग के लिए टॉपिक दिया जा सकता है। जैसे– अगर मैं राजा होता या रानी होती

तब अपनी महानता साबित करने के लिए क्या करता / करती? इसके बाद लिखे हुए को पढ़कर सुनाना, उस पर चर्चा करना, आदि कामों में बच्चे मज़े लेते हैं। ऐसी गतिविधियों में बच्चों को सोचना भी पड़ता है।

बच्चों को यह कहानी इसलिए पसन्द आती है क्योंकि इसमें कई दिलचस्प और हास्यास्पद घटनाएँ होती हैं। ये घटनाएँ बच्चों को गुदगुदाती हैं, उन्हें आकर्षित करती हैं। कहानी के अन्त में एक ऐसे पात्र का प्रवेश होता है जिसकी सहज बुद्धि व व्यवहार से एक सुखद स्थिति पैदा होती है। कहानी में महत्त्वपूर्ण बात यह भी देखने को मिलती है कि अहंकार, घमण्ड और अति-आत्मप्रशंसा अपने आस-पास या ख़ुद में कैसी व्यग्रता और अकुलाहट पैदा करती है।

कहानी में लेखिका ने सरल भाषा और आस-पास इस्तेमाल होने वाले शब्दों का प्रयोग किया है ताकि बच्चे आसानी से कहानी को समझ सकें, और उसका आनन्द ले सकें। इसका श्रेय बहुत कुछ अनुवादक को भी जाता है। लेखन शैली इतनी रोचक है कि बच्चे इसे बार-बार पढ़ने के लिए प्रेरित होते हैं। उदाहरण के लिए, "नाई तीन दिन और तीन रात लगातार पूरी कोशिश करता रहा। उसने बालों को आकार देने वाला ख़ास तेल उन पर मला। घुमावदार बना देने वाला ख़ास पाउडर भी लगाया...।"

किताब के रंगीन और मज़ेदार चित्र बच्चों की कल्पना को कहानी के स्तर पर विस्तार देते हैं। चित्रों के माध्यम से कहानी को समझने और सोचने की दृष्टि में रोचकता आ जाती है।

राजा की मूँछें एक मनोरंजक बाल कहानी है। यह बच्चों को न केवल हँसने का मौक़ा देती है, बल्कि उन्हें अनकहे रूप में जीवन के महत्त्वपूर्ण सबक की ओर इशारा करती है। आत्ममुग्धता और अहंकार की वजह से कितनी परेशानियाँ आती हैं, किताब इस ओर पाठकों का ध्यान खींचती है। ऐसी आत्ममुग्धता की झलक आपको सोशल मीडिया पर विकृत रूप में भरपूर मिल जाएगी। यह कहानी हर उम्र के बच्चों व बड़ों, दोनों के लिए प्रासंगिक लगती है, और हमें अपने वर्तमान में झाँकने, उसे विचारने और सँवारने का भी मौक़ा देती है।

जय शंकर चौबे अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन रुद्रपुर, ज़िला ऊधम सिंह नगर, उत्तराखण्ड में विगत 16 वर्षों से हिन्दी के सन्दर्भ व्यक्ति के रूप में कार्य कर रहे थे। आप व्यंग्य रचना व बाल साहित्य को पढ़ने और बच्चों के साथ बातचीत में दिलचस्पी रखते थे।

संवेदना- इस समीक्षा के लेखक जय शंकर चौबे का पिछले दिनों हृदयाघात के चलते निधन हो गया। पाठशाला *टीम अपने लेखक की स्मृति को नमन करती है।*